B.Ed. II Year
Paper I
Learning & Teaching
Unit - V
Learning and diversity

Dr. A.K.Poddar
Asst. Professor
I.A.S.E., Bilaspur

(III) Creating a psychological climate in the classroom which supports learn er's originality creativity, fearless expression, positivity of emo tion, inter est, team work etc.

कक्षा का वातावरण किसी भी छात्र के लिए एक दूसरा शिक्षक होता है, शिक्षक एवं छात्रों का तालमेल आवश्यक है जब छात्र यह समझता है कि शिक्षक उनकी परवाह करता है, उन्हें अच्छा करना चाहता है, तो छात्र प्रश्न पूछने पर गलतियां करने एवं कुछ नया सीखने के लिए जोखिम लेने में सहज महसूस करते हैं। इस प्रकार का संबंध बनाने के लिए शिक्षक को प्रत्येक छात्र की गलतियों और रूचियों के साथ–साथ उनके संघर्षो एवं कुण्ठाओं में रूचि लेनी चाहिए। उन्हें उपलब्धियों को सीखने और मनाने के लिए एक ज्ञानात्मक मॉडल के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। जब छात्र देखते हैं कि उसका शिक्षक उनकी गलतियों से सीख सकता है और ऐसे समय छात्रों को सहज महसूस होता है।

एक सुरक्षित सीखने के माहौल को बढ़ावा देने के लिए कक्षा, समुदाय और संस्कृति लाना एक आवश्यक पहलू है। छात्रों को यह समझने की आवश्यकता है कि कक्षा में उनके साथी शिक्षार्थियों के साथ उनके सामान्य संबंध क्या है। दैनिक गतिविधियों के दौरान छात्रों को एक सहयोगी शिक्षण प्रयास का हिस्सा होना चाहिए अपनी ताकत साझा करना एवं एक दूसरे को प्रोत्साहित करना। जब छात्र एक दूसरे का आनंद लेते हैं, तो वे पर्यावरण में स्वीकार करने और सुरक्षित महसूस करने की अधिक संभावना रखते है।

शिक्षक की एक और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है सीखने के माहौल को विकसित करना जहां छात्र एक सुरक्षित कक्षा की सीमाओं और अपेक्षाओं के भीतर सीखने के लिए प्रेरित महसूस करते है। एक सुरक्षित वातावरण एवं उद्देश्यपूर्ण नियमों को प्रोत्साहित करके छात्रों को सही काम करने एवं एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक को स्वयं भी सीखने में निरंतरता रखना जरूरी है। छात्रों के लिए उनके प्रयासों के लिए प्रशंसा सकारात्मक सुदृदीकरण और पुरूस्कार आवश्यक है। शिक्षक की प्रबंधन योजना और अपेक्षाएं कक्षा समुदाय में एक बड़ी भूमिका निभाती है।

<u>अपनी कक्षा में एक सकारात्मक सीखने के माहौल बनाने के लिए सुझाव</u>

1. हमेशा कक्षा में नियमों और प्रक्रियाओं का सहयोगात्मक और सकारात्मक रूप से निर्माण करें।
2. लगातार अपने छात्रों को बताएं के आप उन पर विश्वास करते हैं।
3. माइंडसेट की बात करते हुए अपनी खुद की मानसिकता की जांच करें। क्या आप खुद सीखाने ओर पढ़ने की अपनी क्षमता पर विश्वास करते हैं। कया आप मानते हैं कि यह एक शिक्षक के रूप में आपका दायित्व है।
4. भाषा का उपयोग छात्रों के लिए होना चाहिए न कि आपके लिए।
5. अपनी प्रतिक्रिया में शिक्षक को ईमानदार रहने की आवश्यकता है।
6. बच्चों से बातचीत का तरीका सकारात्मक हो उनकी गलती होने पर भी।

सृजनात्मकता (Creativity)

सृजनात्मकता वह मानवीय योगयता हे जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।

Creativity is the human ability by which he presents any noble work or ideas.

वास्तव में संसार के सभी प्राणियों में सृजनात्मकता पायी जाती है। किसी व्यक्ति में कम तथा किसी व्यक्ति में अधिक नवीन अविष्कार तथा समस्याओं का समाधान खोजने के कार्य में सृजनात्मकता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मकता की आवश्यकता है।

सृजनात्मकता का शिक्षा में विशेष महत्व है, शिक्षा के द्वारा बालकों की सृजनात्मक शक्तियों को विकसित किया जा सकता है सृजनात्मकता के विकास के लिए बालकों की शिक्षा व्यवस्था के कुछ प्रमुख सुझाव–

1. यह आवश्यक है अध्यापक भी सृजनशील प्रवृत्ति के हों।
2. अध्यापकों को अपने छात्रों में सृजनात्मक कार्यों से संबंधित सूचनाओं को संकलित करने की प्रवृत्ति विकसित चाहिए।
3. छात्रों के नवीन विचारों को ग्रहण करने तथा उसका सम्मान करना चाहए।
4. अध्यापकों को चाहिए के वे अपने छात्रों के कार्यों की प्रशंसा करें।
5. अध्यापकों को छात्रों के समक्ष समस्यात्मक प्रश्नों अथवा परिस्थितियों को प्रस्तुत करके उनकी प्रतिक्रिया को आमंत्रित करना चाहिए।

6. अध्यापकों को कक्षा तथा विद्यालय में ऐसा वातावरण उपस्थित करना चाहिए जो छात्रों की क्रियाशीलता उनके चिंतन विविधता तथा मौलिकता को प्रोत्साहित करें।

7. कक्षा में बालक के उत्साह एवं रूचि को बनाए रखा जाये।

8. सुधार, खोज तथा अविष्कार की क्रियाओं में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।

9. जीवन के विभिन्न क्षेत्र जैसे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तकनीकी अथवा शैक्षिक आदि की विभिन्न समस्याओं को समझने तथा उनका तर्कसंगत व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना।

10. महान अन्वेषकों के जीवन परिचय से बालकों को अवगत कराना चाहिए जिससे वे उनके जीवन की विभिन्न घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त कर सके।

निडर अभिव्यक्ति (Fearless Expression)

मन मस्तिष्क और चेतन अचेतन को शुद्ध–बुद्ध बनाए रखने और संकल्प को बलवान बनाने के लिए यह जरूरी है कि अपने दिमाग में जो भी विचार आए उसे यथोचित स्थान पर पहुंचाने में तनिक भी विलम्ब नहीं करना चाहिए। सामने वाले को क्या अच्छा लगेगा क्या बुरा लगेगा यह सोचकर अपने विचारों को कैद रखना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता व्यक्ति धीरे–धीरे कुंठित और अंतरमुखी हो जाता है। हमारे अधिकतर परेशानियों, समस्याओं और तनावों का मूल कारण यही है कि हम अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच एक अंतरंग संबंध होना चाहिए। कक्षा में एक प्रजातांत्रिक व्यवस्था होना चाहिए जिससे बालक निडर और भयमुक्त होकर अपनी बात रख सके। शिक्षक को कक्षा का वातावरण भयमुक्त और सामान्य रखना चाहिए एवं बालक के विचारों का सम्मान करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को शिक्षण कौशल, शिक्षण विधि, व्यवहार कुशलता में प्रवीण होने की आवश्यकता है।

सकारात्मक सोच (Positivity of emotion)

व्यक्ति के सकारात्मक और नकारात्मक सोच का उसके मन मष्तिष्क और शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक सोच बालक के विकास एवं उसकी उपलब्धि एवं उसके व्यक्तित्व पर सीधा प्रभाव डालती है। नकारात्मक सोच बालक के इम्यून सिस्टम को कमजोर करती है, समायोजन क्षमता कम हो जाती है नैराश्य एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो जाता है।

शिक्षक को चाहिए के बालक को धनात्मक विचारों के लिए प्रेरित करें उनके सामने उदाहरण रखे, और इससे संबंधित कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय में निरन्तर करे। बालक को समझाया जाए कि हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखना आवश्यक है शिक्षक को चाहिए कि वे हमेशा बालक के विचारों का सम्मान करें।

रूचि (Interest)

रूचि बालक के व्यक्तित्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। बुद्धि की तरह रूचियों में भी व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है। किसी कार्य में रूचि होने पर बालक उस कार्य को सरलता, शीघ्रता तथा मनोयाग से करता है, एवं उसमें सफलता प्राप्त कर लेता है। इसके विपरीत रूचि के अभाव में बालक कार्य को ठीक ढंग से व मन लगाकर नहीं कर पाता। परिणाम यह होता हे कि वह उस कार्य में असफल हो जाता है। यही कारण है कि समस्त शैक्षणिक गतिविधियों में बालक की रूचियों को केन्द्र बिन्दु में रखा जाता है। (N.C.F.) एवं (New Education Policy) में बालक की रूचि को सर्वोपरि रखा गया है।

यही कारण है कि शिक्षाशास्त्री तथा मनोवैज्ञनिक उचित शैक्षिक गतिविधियों के लिए शिक्षक को रूचियों का ज्ञान आवश्यक माना है। कक्षा में अध्यापन के दौरान की अभिव्यक्ति में शिक्षक को उसकी रूचियों एवं क्षमता का ध्यान रखना आवश्यक होता है तभी बालक का सही मायने मे ंसीखना हो पायेगा। उसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक को बालक की क्षमता एवं रूचियों की पर्याप्त ज्ञान हो, अध्यापन की विधि, शिक्षण कौशल शिक्षण तकनीकी का पर्याप्त ज्ञान हो।

समूह कार्य (Team Work)

समूह कार्य एक व्यवस्थित एवं सार्थक शिक्षण विधा है जो छात्रों के छोटे समूहों को मिलाकर एक आम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये छोटे समूह नियोजित गतिविधियों के माध्यम से अधिक सक्रिय और अधिक प्रभावी सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देते है।

समूह में कार्य करना विद्यार्थियों को सोचने संवाद करने समझने और विचारों का अदान–प्रदान करने और निर्णय लेने के लिए प्रेरित करने का प्रभावी तरीका है। छात्र आपस में सीख भी सकते है और सीखा भी सकते हैं।

समूह कार्य को सुनियोजित और प्रयोजनपूर्ण होना चाहिए। समूह कार्य का उपयोग आप कब और कैसे करेंगे यह इस बात पर निर्भर करेगा कि अध्याय के अंत तक आप कौन सी सीखने की प्रक्रिया पूरी करना चाहते हैं।

एक शिक्षक के रूप में आप योजना बनाकर समूह कार्य की सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं –

- सामूहिक गतिविधि के लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम।
- गतिविधि के लिए आबंटित समय।
- समूह में कैसे बांटे।
- समूह के सदस्यों की भूमिका समूह को कैसे संगठित करें।
- आंकलन।
- समूह की गतिविधियों की निगरानी।
- प्रस्तुतीकरण।

Link- http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/
https://www.open.edu.edu>mod>view

संदर्भ – पुस्तकें

पाठक, पी. डी. – शिक्षा मनोविज्ञान
श्रीमाली, एस. एस. – शिक्षा मनोविज्ञान
शर्मा, आर. के. – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
Dr. Pramod Naik - Advanced Educational Psychology
Kuppuswamy B. - Advanced Educational Psychology
Bhatia, H. R. - Elements of Educational Psychology
भटनागर, सुरेश – शिक्षा मनोविज्ञान
गुप्ता, एस. पी. – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान